उजाड़ में संग्रहालय : समय और समाज

रवीन्द्रनाथ मिश्र

पिछले तीन-चार सालों से भारतीय समाज में सूचना तकनीकी और मीडिया का प्रभाव काफी दिखाई दे रहा है। इससे समाज का ही नहीं बल्कि उसकी बुनियाद में मौजूद व्यक्ति का नैतिक ढांचा टूट गया है। जीवन से आंतरिक शुचिता का लोप होता जा रहा है। मनुष्य दिखावों के जरिए अंदरूनी अभावों को भरने की कोशिश कर रहा है। आजकल एक किस्म का भौतिक सुविधाओं से युक्त सुखवादी समाज का निर्माण हो रहा है। फलस्वरूप आत्मावलोकन और अपने सुखों के पार झांकने की प्रवृत्ति गायब हो रही है। अमेरिकी कॉमेडी के लेखक डब्लू. जी. फील्डस की उक्ति वर्तमान सुखवाद का अच्छा उदाहरण प्रस्तुत करती है—"मैं भविष्य के लिए कुछ क्यों करूं? भविष्य ने मेरे लिए क्या किया है?"

अब सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक और आर्थिक परिवर्तन वर्षों में नहीं अपितु महीनों में हो रहे हैं। इससे समाज का एक वर्ग नहीं बल्कि संपूर्ण वर्ग प्रभावित हो रहा है। साहित्य सदियों से इन प्रभावों का गवाह रहा है। बीसवीं सदी के अंतिम दशकों से भारतीय साहित्य ने अपने समय और समाज की नब्ज को गहरी संवेदना के साथ पकड़ा है। समकालीन कविता के सशक्त हस्ताक्षर चंद्रकांत देवताले की रचनाएं भी उन्हीं में से एक हैं। पिछले चार दशकों से ये भी अपने समय और समाज की नाड़ी पर सजग होकर हाथ रखे हुए हैं। वर्ष 2003 में 'काल और अवधि के दरम्यान' (विष्णु खरे), 'एक जन्म में सब' (अनीता वर्मा), 'सराय में कुछ दिन' (नरेंद्र जैन), 'चांद पर नांव' (हेमंत कुकरेती), 'लिख सकूं तो' (नईम), 'सुंदर चीजें शहर के बाहर हैं' (अरविंद चतुर्वेदी), 'पुरखों की परक्षी में धूप' (अशोक वाजपेयी) आदि के काव्य-संग्रहों के प्रकाशन के साथ इस वर्ष 'उजाड' शब्द को केंद्र में रखकर चंद्रकांत देवताले का 'उजाड़ में संग्रहालय' और दिनेश जुगरान का 'मेरा उजाड़ पड़ोस' ये दो काव्य-संकलन प्रकाशित हुए। वस्तुतः न तो संग्रहालय उजाड़ में रह सकता है और न उजाड़ पड़ोस के साथ। इन कवियों की संवेदना का यह नया धरातल है।

'उजाड़ में संग्रहालय' चंद्रकांत देवताले का ग्यारहवां काव्य-संग्रह है जिसमें कुल सत्तर कविताएं संकलित हैं। ये कविताएं अपने समय और समाज की संवेदनाओं से जुड़ी हुई हैं। दरअसल देवताले मुक्तिबोध, नागार्जुन, धूमिल, रघुवीर सहाय आदि रचनाकारों की अगली कड़ी में आते हैं। इक्कीसवीं शताब्दी के समय और समाज

का अवलोकन करें तो प्रमुख रूप से हिंसा, सत्ता प्राप्ति की राजनीति, बाजारवाद, संप्रदायवाद, उपभोक्तावादी संस्कृति, आतंकवाद, सूचना-तकनीक एवं मीडिया का प्रभाव तथा भूमंडलीकरण आदि का जबरदस्त प्रभाव दिखाई देता है। इस समय की कविता जीवन और समाज के विविध परिदृश्य से जुड़ती हुई अधिक वैचारिक हुई है। समाज में पूंजी के प्रभाव के कारण मनुष्य का महत्त्व कम हुआ है। अब उसे आसानी से खरीदा जा सकता है। धन-संग्रह की होड़ में ईर्ष्या-द्वेष की प्रवृत्तियां बढ़ी हैं जिसके कारण मानवीय मूल्यों का हनन हो रहा है। ईर्ष्या-द्वेष, लोभ, लिप्सा, अहंकार, घृणा, स्वार्थपरता, हिंसा, अविश्वास आदि मूल्य विरोधी बुराइयां पूंजीवादी व्यवस्था के केंद्र में आ गई हैं। सत्ता प्राप्ति की दौड़, भौतिक मृगतृष्णा, पूंजी संग्रह की प्रवृत्ति एवं बलात्कार जैसी घटनाओं ने वर्तमान समय और समाज के चेहरे को विकृत कर दिया है। हमारी मानवीय संवेदनाएं जैसे मर गई हैं। बहुत कुछ पा लेने की दौड़ में बहुत कुछ छूटजा जा रहा है।

चंद्रकांत देवताले ने अपनी कविताओं को तरजीह दी है। 'मरे हुए के बारे में' शीर्षक कविता में उनका कहना है–

मैं मय्यत में शरीक हुआ हूं
उस वक्त जिंदगी पहाड़-सी लगती है
जब मैं कंधा देने के लिए लपकता हूं
और शवयात्रा में शामिल चेहरों को पढ़ते हुए
मैं लगभग मरणासन्न हो चुका होता हूं
मौत से डरता है हर कोई
इसके बावजूद आदमी होने से कतराता है।

कवि के पास अपने समय और समाज को परखने की गहरी समझ है। वह सदैव आम आदमी की पंचायत करता है।

'कुछ आंखें दूसरे समय की आंखों में झांकती है
दहशत ने क्षत-विक्षत कर दिया है जिसका चेहरा
मैं खड़ा हूं उनके बीच
जिनके पक्ष में नहीं है इस वक्त
न्याय का एक भी शब्द।

प्रस्तुत संग्रह के संबंध में विष्णु खरे का मंतव्य है कि "कवि जानता है कि समय तारीखों से नहीं बदला करता–हम एक ऐसी 'सभ्यता' में हैं जो उजाड़ में उस संग्रहालय की तरह है जिसकी प्रेक्षक-पुस्तिका में दर्ज टिप्पणियों से आप कभी यथार्थ को नहीं जान सकते, जहां चीजों पर वैधानिक चेतावनियां लिखकर सारी जिम्मेदारियों से मुक्ति पा ली गई है और अन्त में हर अज्ञात व्यक्ति से सावधान रहने की हिदायत देकर आदमी को आदमी के खिलाफ तैनात कर दिया गया है।" देवताले की पहली कविता 'सिर्फ तारीखें नहीं बदला करतीं समय' में वर्तमान परिदृश्य में आम आदमी की पीड़ा को व्यक्त किया गया है।

इधर झूठ और धोखे की भीड़ भगदड़ में
फंसे ठिठुरते असंख्य लोग
पेट और आत्मा के लिए ईंधन ढूंढ़ रहे हैं
नुमाइश में नहीं हैं
गंजे पहाड़ों के झुके कंधे
महान नदियों की कीचड़ सनी आंखें
मातृभाषा के भीतर का भीषण उजाड़
मन्नतों के पथराए होंठ
और सपनों का दुर्भाग्य भी नहीं है
मालिकों की इस शोभायात्रा में

भवानी प्रसाद मिश्र ने अपने एक वक्तव्य में कहा था कि "जो अभी की कविता नहीं है, वह कभी की कविता नहीं हो पाएगी।" वस्तुतः देवताले की कविता अभी की कविता है, जिससे वे अपने परिवेशगत जीवनमूल्यों से जुड़कर एवं व्यक्ति को केन्द्र में रखकर कलम चलाते हैं। "फक्त एक वहम है जो चीजों को थामे खड़ा है" कविता में कवि वर्तमान न्याय व्यवस्था जिसको कि सुधारने की बार-बार गंभीर कोशिश की जा रही है लेकिन स्थिति जैसी की वैसी है का जिक्र किया है–

बरसों से चल रहे हैं मुकदमें
मुकदमें चल रहे हैं
किंतु घोड़े अड़े हैं फैसलों के
बढ़ रही हैं तारीखें
और सजा एक को भी नहीं हो रही
सेवानिवृत्ति के दरवाजे पर खड़ा
राजस्व अधिकारी बड़बड़ाता है
बड़बड़ाता है राजस्व अधिकारी
चाय की प्रतीक्षा में
चपरासी गया सो गया

जीप ले गया ड्रायवर डीजल भरवाने
वह भी पेट्रोल पंप का हो गया

आज सब तरफ़ अपराध, अविश्वास, मूल्यहीनता, विवशता, पशुता, हिंसा आदि का बोलबाला है और इन सबका विरोध करने वाला कोई नहीं है। वर्तमान परिदृश्य के लिए सबसे अधिक उत्तरदायी है आज की राजनीति जो कि बाहुबलियों और मनीपावर पर केन्द्रित है।

हिंसा भड़काने की कोशिश में धरपकड़'
और फिर इस धारा के कानून सम्मत चेहरे इतने
जैसे अंधेरे में नाचते अनगिन काल्पनिक पशुओं के
भयावह मुखौटे

(उजाड़ में, पृष्ठ 27)

रघुवीर सहाय ने जहां 'आत्महत्या के विरुद्ध' कविता में नेहरू युग की विसंगतियों का यथार्थ चित्रण किया है, वहीं पर धूमिल ने 'संसद से सड़क तक' काव्य-संग्रह की अधिकांश कविताओं में आजादी के बाद की स्थिति का लेखा-जोखा प्रस्तुत किया है। इनकी 'पटकथा' कविता तो पूरे परिदृश्य को हमारे सामने खोल कर रख देती है। आजादी के बीस साल बाद की स्थिति पर धूमिल ने कहा कि

'क्या आजादी सिर्फ तीन थके हुए रंगों का नाम है।
जिन्हें एक पहिया ढोता है

या इसका कोई खास मतलब होता है। आज स्वतंत्रता के सतावन वर्ष बाद भी देवताले को लगता है कि आजादी का सुख अभी भी आम आदमी तक नहीं पहुंचा है—

आजादी से थके लोगों को अब याद नहीं है
सफेद कबूतरों की उड़ानें
चमकदार और सुंदर होकर
चीजों में प्रवेश कर चुका है अंधेरा
उन चीजों में भी
जो अभी हमें दिखाई नहीं दे रही
और प्राचीन पत्थरों के बीच बैठी एक बुढ़िया
आजादी के समकालीन होने के लिए
ढूंढ रही है पानी

(उजाड़ में, पृष्ठ-20)

प्रस्तुत संग्रह की 'उजाड़ में संग्रहालय', 'पंद्रह अगस्त', 'अपना जहाज', 'म्यूजियम की पुस्तिका से', 'वैधानिक चेतावनी' आदि की कविताएं 21वीं सदी में कबीर की जमात के लोगों की नियति का यथार्थ चित्रण करती हैं।

औसत और निम्न जनों को नसीब नहीं होने से
सुविधाएं ऐसी जैसे—अनाज-कपड़े या शौचालय
वैधानिक की गरिमा नहीं अवैधानिक के जुर्म पर
कायम रहती है, उनकी जीवन-शैली
कुछ-कुछ उन कवियों की कविता जैसी
कबीर जैसे जमात में जो आते हैं।

(पृष्ठ-25)

रघुवंश मणि के कथन के अनुसार 'इक्कीसवीं शताब्दी के पहले दशक में विद्यमान समकालीन हिंदी कविता एक निरंतर बदलाव की प्रक्रिया से गुजर रही है। यद्यपि इस गतिशीलता को किसी स्थूल दृष्टि के सांचे से नहीं मापा जा सकता। हिंदी कविता अपने सूक्ष्म अर्थों में अतिशय राजनीतिक है और संसदीय राजनीति की आक्रामक और हिंसक मानवविरोधी भाषा के स्थान पर एक विनम्र मगर सघन मानवीय प्रतिरोध के प्रयास में लगी है।" (आलोचना-12, 03, पृष्ठ-43)

वस्तुतः आज भी हमारा भारतीय समाज आभिजात्य, मध्यम और सर्वहारावर्ग के अंतर्गत बंटा हुआ है। राजनीति, न्याय-व्यवस्था, धर्म, अर्थतंत्र सब कुछ एक के पक्ष में है, ये जो कुछ करते हैं सब वैधानिक है। तुलसीदास के शब्दों में कहें तो "समरथ को नहिं दोष गुसाईं"। यहीं पर दूसरे के पक्ष में कुछ भी नहीं है। इनके सारे क्रिया-कलाप अवैधानिक हैं। देवताले ने पहले ही अपने तीसरे काव्यसंग्रह 'लकड़बग्घा हंस रहा है' (1980) में भारतीय समाज को दो वर्गों में विभाजित कर दिया था।

"थोड़े से बच्चों के लिए
एक बगीचा है
उनके पांव दूब पर दौड़ रहे हैं
असंख्य बच्चों के लिए
कीचड़-धूल और गंदगी से पटी
गालियां हैं जिनमें वे
अपना भविष्य बीन रहे हैं"

आज के माफियाओं द्वारा हिंसा को केंद्र में रखकर चलाई जा रही राजनीति से कवि भलीभांति परिचित है। हाल ही में राजनेताओं एवं अन्य माफियाओं द्वारा बलात्कार, हिंसा, पैसों का घोटाला आदि कई घटनाएं घटित हुई हैं। राजनीतिक षड्यंत्रों की शिकार गरीब जनता की मृत्यु के तमाम अन्य कारण बता दिए जाते हैं। अकाल, भूख, बाढ़,

लू, ठंड, विषाक्त भोजन आदि से मरने वाले नागरिकों की मृत्यु के अन्य कारण बता दिए जाते हैं। कभी-कभी वास्तविक स्थिति का पता चलने पर जब सरकार सहयोग हेतु धनराशि की घोषणा करती है तो दुष्यंत के शब्दों में कहें तो–

यहां तक आते-आते सूख जाती हैं कई नदियां
मुझे मालूम है पानी कहां ठहरा हुआ होगा।
कई फाके बिताकर मर गया, जो उसके बारे में
वो सब कहते हैं अब, ऐसा नहीं, ऐसा हुआ होगा।
(साये में धूप, पृष्ठ-15)

देवताले की कविता 'बताया है' में भी वर्तमान जनविरोधी प्रवृत्तियों का खुलासा और सटीक चित्रण किया गया है।

बताया गया है कि बारिश की तबाही से सौ मरे
बताई जाती रही है इसी तरह
चीख के गुबार में गायब होती
जाड़े और लू से मरने वालों की संख्याएं
मालिकों ने बताया
दासों की मौत के बारे में
विषाक्त भोजन खाने या
मिलावटी शराब पीने से मरे
हंटरों-जूतों-लातों
और बलात्कार के बारे में
कोई नहीं बताया
कोई नहीं बताया उन हिकमतों के बारे में
मरने के पहले जिनसे मार दिया जाता

नागार्जुन की 'मास्टर' और 'प्रेत का बयान' कविता की तर्ज पर देवताले ने भी 'नोटबुक से' (एक), नोटबुक से (दो); 5 सितंबर : 90 आदि कविताओं में वर्तमान शिक्षा व्यवस्था एवं अध्यापक की नियति को रेखांकित किया है।

श्यामलाल गुरुजी टाट पट्टियों और डस्टर के बारे में
परेशान थे, पूरी बहस के दौरान
और महीनों तक देखते रहे वे आसमान में
नई टाटपट्टियों की उड़ान
(पृष्ठ 37)

'एक गंजा आदमी सिर पर कंधा रखे सोया है' कविता में कवि ने इक्कीसवीं सदी में सूचना तकनीकी और मीडिया द्वारा परोसे जा रहे भारत की रंगीन छवि पर व्यंग्य किया है। उसका मानना है कि सरकार देश की हालत की वास्तविकता को छिपाकर लोक लुभावन विचारों एवं दृश्यों को प्रस्तुत करती है।

अपनी प्रिय घटना प्रधान बीसवीं सदी-सा तो
नहीं उसका गंजापन एकदम
पर, हां, इक्कीसवीं सदी की आशंका जैसा
जरूर चमकता उस पर सुंदर कंघा
जो कंप्यूटर कैमरे से दिखा जाता रंगीन दूरदर्शन पर
यह दृश्य देख कितना हर्षित होता अपना
जन-गण-मन

देवताले की कविताओं में समसामयिक स्थितियों एवं घटनाओं का सामान्य चित्रण है परंतु उनमें जीवन एवं समय के सरोकारों को बड़ी संजीदगी के साथ उकेरा गया है। 'हमसे भी तो कुछ सीखना चाहिए मनुष्यों को', 'बंबई : 5 मार्च 93', 'क्या हम बैसाखियों की तरह हैं', 'कुल्हाड़ी', 'अगर तुम्हें नींद नहीं आती' आदि कविताएं उदाहरण स्वरूप हैं।

जनता के साथ झूठ-फरेब, दगाबाजी करने वाले अवसरवादी लकडबग्घे जैसे शोषक चरित्रों को कवि ने अपनी रचनाओं के द्वारा बेनकाब किया है। 'झूठ के दरवाजों से निकलकर', 'कौन सम्मन जारी करेगा', 'कई-कई हस्ताक्षर हैं समय के', आदि कविताएं उन चरित्रों के करिश्मे को व्यक्त करती हैं।

निष्ठा के उजड़े नंगे पेड़ों पर लदे
उद्घोषणाएं कर रहे हैं कौवे
खून पानी की तरह बह रहा है
जिसका धंधा कर रहे हैं राष्ट्रीय दलाल
आग की सन्दूक में रक्खा है हलफनामा
लपटों के कपड़े पहने खड़े हैं गवाह
किंतु आसीन है एक गूंगा बहरा स्याह पत्थर
मृतात्माएं यदि कर सकतीं
तो जरूर करतीं जारी सम्मन कई-कई चीजों के लिए
जो संभव होता पहुंच सकना मृतकों
के न्यायालय में
निस्संदेह मिलता हमें न्याय
(पृष्ठ 113-114)

देवताले अपने समय और समाज के प्रति काफी

जागरूक और सजग दिखाई देते हैं। वह अपनी आंखों में असंख्य आंखों के दर्द लिए हुए सबके समय को दो टूक शब्दों में परिभाषित करते हैं। कवि बीजों में छिपी उर्वरा शक्ति की भांति उन लोगों पर मुरीद है जो कि चीर-फाड़ के औजारों तथा चमड़े की भाठी की सांस की तरह काम को अंजाम देते हैं। कवि घड़ीसाज, दर्जी, बढ़ई आदि हाथ से काम करने वाले चुपचाप लोगों की तरह काम करके क्रांति लाना चाहता है।

सांप्रदायिकता, फासीवाद, सामंती वर्चस्व, नारीयातना, धार्मिक पाखंड, माफियाओं की गिरोहबंदी, समसामयिक घटनाएं एवं विविध परिस्थितियां, रोजमर्रा की जिंदगी के अनुभव आदि वृत्तंत बहुलता देवताले की कविताओं का मूल स्वर है। आजकल राजनीति और अन्य क्षेत्रों में माफियाओं के बढ़ते प्रभावों से कवि भलीभांति परिचित है। 'माफिया सरगने की गोपनीय हिदायतें' कविता के पांच अंशों में देवताले ने माफिया वर्ग की काली करतूतों का खुलासा किया है।

डर पैदा करो
भयभीत लोग जब बड़ी तादाद में इकट्ठा हो जाएंगे
तो खून-खच्चर आगजनी का फायदा मिलेगा
हर वक्त हमें लोहा लेना है
अमन-चैन से
सुरक्षित मानसिकता सबसे बड़ी दुश्मन है
इसके विरुद्ध पर्चियां,
पेम्फलैट, गुमनाम खत, टेलीफोन
और अफवाह फैलाने वाली कानाफूसी
सबसे
कारगर हथियार है
पैट्रोल और आग घरों और इंसानों पर ही काफी नहीं
उनकी सोच, सपनों और नींद तक पर हमले की
सूक्ष्म कार्यविधि पर अमल हो।

(पृष्ठ 73)

धूमिल ने 'मुनासिब कारवाई' और 'भाषा की रात' कविता में क्रमशः कविता को भाषा में आदमी होने की तमीज कहा है और इसके साथ ही भाषा के माध्यम से राजनेताओं द्वारा चलाए जा रहे षड्यंत्रों का खुलासा भी किया है। देवताले ने कविता के इलाके की सीमा रेखा को सुनिश्चित करते हुए कहा कि कविता लिखना सबके बस की बात नहीं है। इसके लिए संवेदनाओं की सही परख होनी चाहिए–

चीखने-चीखने में भी फर्क होता है।
अगर किसी को इसकी तमीज नहीं
तो उसे सब्जियां उगाना चाहिए
चाहे तो वह सोना भी शुद्ध कर सकता है
पर कविता उसके लिए निषिद्ध इलाका है।

(पृष्ठ 135)

प्रस्तुत काव्य संग्रह में अन्य विषयों की अपेक्षा नारीविषयक कविताएँ अधिक हैं। देवताले ने अपने पहले के काव्य-संग्रहों में और इसमें भी नारी के माता, पत्नी, पुत्री के साथ दलित-शोषित, पत्थर तोड़ने वाली, मजबूरी में देह का धंधा करने वाली, प्रशासिका, पति पर निगाह रखने वाली आदि नारी के विविध रूपों की चर्चा की है। 'उजाड़ में–'संग्रहालय' में 'कम खुदा न थी परोसने वाली', उस औरत का दुख', 'देवी-वध', 'बाई! दरद ले', 'मैं अभी-अभी मां से मिलकर आया हूं', 'औरतपन और बुद्धिमता के बीच', 'हिदायतें देने और निगरानी रखने वाली बीवियां', 'कन्या महाविद्यालयों की मैडमों से एक प्राचार्य की बातचीत' और 'औरत का हंसना' आदि नारी केंद्रित नारी जीवन के अनेक पक्षों को व्यक्त करती है।

याद मत कर अपने दुखों को
आने को बेचैन है धरती पर जीव
याद मत कर अपने दुःखों को
आने को बेचैन है धरती पर जीव
आकाश पाताल में भी अट नहीं सकता
इतना है औरत जात का दुख
धरती का सारा पानी
धो नहीं सकता
इतने हैं आंसुओं के सूखे धब्बे
सीता ने कहा था–फट जा धरती
न जाने कब से चल रही है ये कहानी
फिर भी रुकी नहीं है दुनिया।

(पृष्ठ 85)

दरअसल आज दलित और नारी की समाज में पहले जैसी स्थिति नहीं है। उनकी हालत में काफी कुछ सुधार हुआ है। घर-परिवार, समाज एवं देश के स्तर पर नारी अपने अधिकारों और कर्तव्यों के प्रति जागरूक हुई है।

सके सोचने और समझने का दायरा गहन एवं व्यापक आ है। देवताले ने पारिवारिक संबंधों की मानवीय संवेदनाओं को अच्छी तरह छुआ है। मीडिया एवं अन्य प्रभावों के कारण हो रहे सामाजिक परिवर्तन के संदर्भ में पति-पत्नी एवं अन्य संबंधों में आए बदलाव को भी उन्होंने रेखांकित किया है। अब पति परमेश्वर की अवधारणा समाप्त होकर मित्रवत् होती जा रही है। आधुनिक बीवियां अपने पतियों को हिदायतें देने के साथ-साथ उन पर निगरानी भी रखती हैं।

पतियों को हिदायतें देने और उनकी कारगुजारियों पर
निगरानी रखने वाली बीवियां म्यान से बाहर निकली
तलवार की तरह
मुस्तैदी से अंजाम देती हैं अपने इरादों को
जैसे इसी के लिए उनका अवतार हुआ पृथ्वी पर
यकीन नहीं आता कि यही कल
कितनी मासूम और पाक लड़कियां थीं

(पृष्ठ 92)

'उजाड़ में संग्रहालय' की कविताएं वैविध्य भावभूमि पर आधारित हैं जिनमें अपने समय और समाज की केंद्रीय धड़कन सर्वत्र विद्यमान है। कवि की भाषिक संरचना की अपनी खास बनावट है। विचारों की नवीनता के साथ-साथ आधुनिक सूचना तकनीकी के प्रचलित मोबाइल, कंप्यूटर, टेलीफोन आदि जैसे शब्दों का भरपूर प्रयोग मिलता है। इनकी भाषा प्रतीकों, बिंबों, और नए उपनामों से सजी हुई है।

मां थी
सबके बाद खाने वाली
जिसके लिए दाल नहीं
देचकी में बची थी हलचल
चुल्लू-भर पानी की
और कटोरदान में भाफ के चंद्रमा जैसी
रोटी की छाया थी।

देवताले द्वारा प्रयुक्त खतरनाक, साजिशें, दहशत, क्षत-विक्षत, पिस्तौल, हंटरों-जूतों, लातों, बलात्कार, हथियार, अफवाह, मारकाट, आगजनी आदि जैसे शब्दों से वर्तमान समय और समाज का संपूर्ण उपस्थित हो उठता है। कवि की भाषा आज और अभी की भाषा है।